नवम् अध्याय

उद्देश्यगत शिल्प

मानसिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण

यौनवाद

हीनता ग्रन्थि और अहंता के दर्शन

व्यक्ति चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

नवम् अध्याय

उद्देश्यगत शिल्प

उद्देश्य उपन्यास का प्रमुख तत्व है। मानव जीवन से सम्बन्धित होने के कारण इसमें सामाजिक सम्बन्धों, विचारों, इच्छाओं, पीड़ाओं, सुखों, संघर्षों, असफलताओं आदि विभिन्न पक्षों का चित्रण होता है। इन समस्त पक्षों का चित्रण करते समय उपन्यासकार समाज में व्याप्त विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं, मानव जीवन की कुण्ठाओं, दमित वासनाओं आदि से प्रभावित होता है। इन अुनभवों से वह अनेक निष्कर्ष निकालता है और अपने उद्देश्य निर्धारित करता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर वह साहित्य सृजन करता है। उद्देश्य वह तत्व है जो पाठकों का सम्पूर्ण उपन्यास पढ़ने के पश्चात् पाठक यह अनुमान लगा लेते हैं कि इस रचना द्वारा लेखक क्या कहना चाहता है, वही उस रचना के उद्देश्य होते हैं। "उपन्यास का उद्देश्य नये पथ का खोज करना है।"[1]

इलाचन्द्र जोशी मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकार हैं। मानव जीवन का विश्लेषण कर उनका संश्लेषण करना ही उनके उपन्यासों का मूल उद्देश्य है। मनुष्य के अन्दर स्थित विभिन्न पशु प्रवृत्तियों का उद्घाटन एवं उनका निराकरण इनके उपन्यासों में मुख्य रूप से हुआ है। इन्होंने जीवन की बाह्य समस्याओं को अधिक महत्व न देकर मानव मन की आन्तरिक समस्याओं का गहन विवेचन किया है। मनुष्य के अन्तर्मन की दमित वासनाओं, कुण्ठाओं, विभिन्न पशुप्रवृत्तियों, हीनता ग्रन्थि और अहंता का चित्रण इनके उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है। व्यक्तिगत जीवन का चित्रण कर उन्होंने समाज कल्याण एवं राष्ट्रकल्याण का चित्रण करने का प्रयास किया है।

मानसिक विकृतियों का विश्लेषण : मानव मन की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का मूल उद्देश्य है।

---

1 'आज का हिन्दी उपन्यास : इन्द्रनाथ मदान, पृष्ठ – 53

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

व्यक्ति के अन्दर विभिन्न प्रकार की दमित प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। ये प्रवृत्तियाँ यौनवाद के अतिरिक्त जीवन के अन्य पक्षों से भी सम्बन्धित हैं, जिनका किसी कारणवश दमन हो जाता है। इन प्रवृत्तियों के दमन के फलस्वरूप व्यक्ति के अन्दर विभिन्न प्रकार की कुण्ठाएँ जन्म लेने लगती हैं। इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में इन कुण्ठाओं का उद्‌घाटन और विश्लेषण हुआ है।

इनके उपन्यासों के सभी पात्रों में अनेक प्रकार की मानसिक विकृतियाँ विद्यमान हैं। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा के अन्दर दमित कामग्रन्थि के कारण विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। उसके अन्दर पुरूषों को रिझाने की प्रवृत्ति विद्यमान है। नैतिकता, शिष्टाचार, सामाजिक मर्यादा आदि की परवाह न कर वह डॉ. कन्हैयालाल के प्रेम में आकण्ठ डूबे रहती है। 'संन्यासी' में नन्दकिशोर के अन्दर स्थित कामभावना, अहंता, शंकालु व ईर्ष्यालु आदि प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। 'पर्दे की रानी' में निरंजना के अन्दर की काम–प्रवृत्ति इन्द्रमोहन के अन्दर की काम–भावना एवं उनकी स्वपीड़न व परपीड़न की वृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ और नन्दिनी के अन्तर्मन में विद्यमान विभिन्न पशु प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। मंजरी पारसनाथ से कहती है– "अपने भीतर नजर डालो, वहाँ तुम्हारे ही शब्दों में भयंकर कुंभीपाक भभक रहा है और रौरव के विषैले कीड़े कुलबुला रहे हैं। बाहर तो केवल उस भीतरी नरक की अँधेरी छाया व्यक्ति को डराना चाहती है।"[1] 'निर्वासित' में महीप की कुण्ठा की भावना का विश्लेषण किया गया है। 'सुबह के भूले' में गुलबिया की हीनता की अनुभूति का विश्लेषण किया गया है। 'ऋतुचक्र' में अभुक्त कामनाओं से ग्रस्त विभिन्न पात्रों का विश्लेषण किया गया है। 'जहाज का पंछी' में नायक के माध्यम से विभिन्न सामाजिक कुप्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। 'भूत का भविष्य' में भूतनाथ के माध्यम से समाज के निम्नतम् वर्ग की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 166

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

यौनवाद : इलाचन्द्र जोशी के सभी उपन्यासों में यौनवाद के दर्शन होते हैं। "उनके सभी उपन्यासों में यौन–समस्या उभर कर सामने आयी है, उनके प्रायः सभी पात्र विशेषतः पुरूष पात्र इसी धुरी के चारों ओर घूमते रहते हैं। उनका कहना है कि उनके उपन्यासों का उद्देश्य मनुष्य के अहंवाद पर प्रहार करना है; परन्तु उनके उपन्यासों में सेक्स ही जीवन की मूल प्रेरणा प्रतीत होता है।"[1] उन्होंने व्यक्ति की यौन समस्याओं का उद्घाटन और विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

इनके उपन्यासों के पुरूष पात्र हो या स्त्री पात्र दोनों ही एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। उनमें काम की इतनी प्रबलता है कि वे उसके लिए उचित–अनुचित कुछ भी नहीं सोचते हैं और किसी भी प्रकार से एक–दूसरे को पाने की कोशिश करते हैं। पुरूष पात्र तो इन मामलों में दो कदम आगे हैं और वे अपनी कामभावना की सन्तुष्टि के लिए नारी की ओर भागते रहते हैं। प्रेम और रोमांस के कारण वे नायिका को भगाकर ले जाते हैं। 'संन्यासी' में नन्दकिशोर शांति को भगा ले जाता है। शांति द्वारा अपने भाई के पास पहुँचाने की बात नन्दकिशोर के हृदय में चोट पहुँचाती है। "जिस रंगीन रोमांस की सुनहली कल्पना के मधुर मोह से मेरा मन आच्छन्न होने लगा था, वह टूटता हुआ दिखाई दिया।"[2] इसी प्रकार 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ मंजरी को भगाकर ले जाता है, 'मुक्तिपथ' में राजीव सुनन्दा को भगाकर ले जाता है और 'भूत का भविष्य' में राकेश नन्दा को भगाकर ले जाता है।

'लज्जा' उपन्यास में डॉ. कन्हैयालाल यौन–भावना ग्रस्त व्यक्ति है। सुन्दर और भोली–भाली लड़कियों को फाँसना उनका कार्य है। वह पहले चिकनी–चुपड़ी बातों में लज्जा को फँसाता है और फिर कमलकुमारी को फँसाकर उसके साथ रासलीला खेलता है। 'संन्यासी' में नन्दकिशोर यौन–भावना से ग्रस्त है। प्रारम्भ में ही जयंती को देखकर उसकी कामप्रवृत्ति भड़क उठती

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ. सुषमा धवन, पृष्ठ – 207

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 44

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है– "मैं अन्यमनस्क होकर ये सब बातें सुन रहा था। हृदय के प्रत्येक रक्त कण में एक मीठी उदासी समा गई थी। एक अनोखी अनुभूति, एक व्याकुल चेतना मेरी रगों में संचारित हो रही थी।"[1] वह पहले शांति को भगाकर ले जाता है और शांति के चले जाने के पश्चात् जयंती से विवाह कर लेता है, लेकिन अपनी शक्की प्रवृत्ति के कारण उसको भी खो देता है। 'प्रेत और छाया' का नायक पारसनाथ तो विभिन्न स्त्रियों से अपने सम्बन्ध की बात को स्वयं स्वीकारता है– "किन–किन उच्च श्रेणी की स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का मौका उसे मिला था, जिनसे किसी कारण से वह कतराता रहा, इसके बाद जिन–जिन निम्न श्रेणी की स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर चुका था।"[2] यौन–भावना ग्रस्त होने के कारण पहले वह मंजरी से सम्बन्ध स्थापित करता है, उसके बाद नन्दिनी से और फिर नन्दिनी की बहन हीरा से भी प्रेम–सम्बन्ध स्थापित करता है, उसके बाद नन्दिनी से और फिर नन्दिनी की बहन हीरा से भी प्रेम–सम्बन्ध स्थापित करता है। 'निर्वासित' का नायक महीप यद्यपि अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाता है, लेकिन वह भी यौन भावना से ग्रस्त है। वह बारी–बारी से सभी खन्ना बहनों को आकर्षित करने का प्रयास करता है। इसी प्रकार 'त्याग का भोग' का नायक नृपेन्द्ररंजन के अन्दर भी अतृप्त काम भावना विद्यमान है। वह पहले मनिया को सम्मोहित करके अपने प्रेमजाल में बाँधता है और फिर वीरेन्द्र की पत्नी शोभना की ओर आकर्षित होता है। 'पर्दे की रानी' का नायक इन्द्रमोहन तो निरंजना के कौमार्य को खण्डित करने के लिए अपनी पत्नी शीला तक को जहर देकर मार डालता है। 'भूत का भविष्य' का नायक राकेश नन्दा को भगाकर ले जाता है।

हीनताग्रन्थि और अहंता के दर्शन : इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न कारणों से उत्पन्न हीनता की ग्रन्थि को चित्रित किया है। उनका उद्देश्य हीनता ग्रन्थि के कारणों की खोज करना एवं उन्हें सामने लाना

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

2 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है। व्यक्ति के अन्दर पूर्व की किसी घटना या अपने रूप, नाम स्थिति आदि के कारण एक प्रकार की लघुता की भावना उसे हर समय कचोटती रहती है। जिसके कारण वह एक व्यवस्थित जिन्दगी नहीं जी पाता है। इलाचन्द्र जोशी ने इन कारणों एवं इनके प्रभावों को प्रकट किया है।

हीनता की भावना के दर्शन 'पर्दे की रानी' और 'सुबह के भूले' में होते हैं। 'पर्दे की रानी' में निरंजना के अन्दर हीनता की ग्रन्थि विद्यमान है। माता की हत्या की घटना को देखने एवं मनमोहन सिंह द्वारा वेश्या माँ और हत्यारे पिता की सन्तान होने की बात सुनकर वह हीन–भावना से ग्रस्त हो जाती है। 'निर्वासित' में उपन्यास का नायक महीप अपने बबुआ रूप के कारण हीनभावना ग्रस्त हो जाता है। 'सुबह के भूले' में नायिका अपने नाम के कारण हीनभावना से ग्रसित हो जाती है। वह अपना नाम गुलबिया से बदलकर गिरिजा रखती है। अपने साथियों को उसे अपने घर बुलाने में हीनता की अनुभूति होती है। फैशनेबल समाज के बीच जाने पर वे अपने पहनावे आदि के कारण हीनता से ग्रस्त हो जाती है, लेकिन अन्त में वह अपने पुराने स्वरूप में लौट आती है।

हीनता ग्रन्थि के साथ–साथ उन्होंने अहंता की भावना को भी उजागर किया है। उन्होंने अहंवाद के विभिन्न स्वरूपों का उद्‌घाटन किया है। उन्होंने दिखाया है कि जहाँ व्यक्ति का परिष्कृत अहंभाव उसे स्थान–स्थान पर कार्य करने की प्रेरणा देता है वहीं एकाकी अहंवाद न केवल प्राण लेने वाला होता है, बल्कि हमारे आस–पास के वातावरण को भी नष्ट–भ्रष्ट कर देता है। विभिन्न प्रकार की सफलतायें प्राप्त करने के बाद हमारा स्वभाव अहंवादी हो जाता है।

'लज्जा' उपन्यास में लज्जा के अन्दर अहं भावना विद्यमान है। अहंभाव के कारण वह अपने प्यारे भाई के स्नेह की अवहेलना कर आत्मरत जीवन व्यतीत करना चाहती है। उसका भाई राजू भी अहंवादी है, किन्तु वह अपने अहंभाव का परिष्कार समाज कल्याण करने में लगता है, लेकिन लज्जा की अहंभावना का वह विरोध करता है और अन्त में आत्महत्या कर लेता है। उसकी आत्महत्या लज्जा के अहंभाव पर एक निर्मम आघात करती है, जिसे वह

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जीवनपर्यन्त भुला नहीं पाती है। 'संन्यासी' में नन्दकिशोर घोर अहंवादी है। अपने अहं के कारण ही वह स्वार्थी, ईर्ष्यालु और शंकालु स्वभाव का बन जाता है। इसी कारण वह शांति पर शक करता है। शांति से तो वह चाहता है कि वह उसके प्रति एकनिष्ठ रहे लेकिन अपना उसके प्रति ईमानदार नहीं रह पाता है। वह जयंती से भी विवाह इसलिए करता है ताकि जयंती के नारीत्व से खिलवाड़ कर सके वह स्वयं स्वीकार करता है– "मैंने तुमसे प्रेम के लिए विवाह किया है, सरासर झूठ होगा।"[1] नन्दकिशोर के अहंवादी व्यक्तित्व का उद्‌घाटन स्वयं जयंती उसके सामने करती है। उसके अनुसार आज का पुरूष स्वार्थी होने के साथ–साथ ईर्ष्यालु और शंकालु भी हो गया है। 'प्रेत और छाया' का पारसनाथ अहंवादी है। जब–जब वह अपने दुष्कृत्यों को अंजाम देने में असफल होता है, तब–तब उसे अहंवादी रूप के दर्शन होते हैं। दूसरों के चरित्र को नष्ट करके उसे आत्मतृप्ति का अनुभव होता है।

'मुक्तिपथ' में राजीव के अन्दर अहंवादी रूप के दर्शन होते हैं। तीन वर्ष तक साथ–साथ काम करने के बाद भी सुनन्दा के प्रति उसका शुष्क व्यवहार उसके अहंवादी रूप को प्रकट करता है। 'जहाज का पंछी' में अनेक स्थानों पर नायके के अहंवादी रूप के दर्शन होते हैं। वह स्वयं अपने अहं को ही प्रकट नहीं करता बल्कि अन्य लोगों के अहं को भी प्रकट करता है– "याद रखो डॉक्टर, आज भले ही तुम इस पुलिस वाले की सहायता से या स्वयं अपने अधिकार के बल पर किसी व्यक्ति को निस्सहाय और निराश्रय समझकर उसे अधिक–से–अधिक दुर्गतिपूर्ण परिस्थितियों में ढकेलकर अपने अहं की अपने झूठे अधिकार के मद की तृप्ति कर लो, पर यह भूलकर भी न समझना कि आज के युग की हजारों विकृतियों के ताने–बाने से उलझी हुई विषम आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के शिकारों के प्रति स्वयंभू समाजपतियों का यह रूख जनता द्वारा बराबर इसी तरह उपेक्षित रहता चला जायगा।"[2] वह अपने अहंवादी रूप के

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 172

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 34

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कारण असामान्य व्यवहार करता है। वह स्थान–स्थान पर विभिन्न लोगों के सम्पर्क में आता है और उसे लगता है कि सम्पूर्ण विश्व उसके खिलाफ षडयन्त्र कर रहा है।

व्यक्ति चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण : इलाचन्द्र जोशी ने पात्रों के चरित्र–चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन के चित्रण का प्रयास किया है। एक ओर उन्होंने पात्रों की यथार्थ स्थिति का नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर समाज के यथार्थ रूप को चित्रित किया है। एक ओर व्यक्ति की अन्तश्चेतना को प्रकट किया है, वहीं दूसरी ओर समाज की बाह्य परिस्थितियों की ओर भी अपनी पैनी दृष्टि से ध्यान आकर्षित किया है। उनके व्यक्ति के माध्यम से सामाजिक जीवन का चित्रण करने वाले उपन्यासों में 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'जिप्सी', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र' तथा 'भूत का भविष्य' आते हैं। इसके साथ–साथ अन्य उपन्यासों में भी सामाजिक जीवन की उपेक्षा नहीं की गयी है, बल्कि व्यक्तिगत जीवन की आन्तरिकता का चित्रण होने के साथ–साथ सामाजिकता का चित्रण भी हुआ है।

'मुक्तिपथ' उपन्यास में राजीव व सुनन्दा के जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रित करके समाज में व्याप्त अनेक प्रकार की विषमताओं का चित्रण किया गया है। प्रारम्भ में ही समाज में आजादी के बाद क्रांतिकारियों की दशा का वर्णन किया गया है, किस प्रकार ढोंगी, चापलूस, स्वार्थी प्रकृति के व्यक्ति कारों में घूम रहे हैं, लेकिन राष्ट्रभक्त राजीव एक छोटी–सी नौकरी के लिए दर–दर भटकता है, उसी प्रकार सुनन्दा के माध्यम से भारतीय समाज में शोषित विधवा की दयनीय स्थिति को प्रकट किया गया है। 'सुबह के भूले' में गुलबिया के माध्यम से यह प्रकट किया गया है कि किस प्रकार निम्न या मध्यम वर्ग का समाज अपने उच्च वर्ग से प्रभावित होता है और उसकी नकल करता है। झमियाँ ग्रामीण क्षेत्र की एक सीधी–साधी निष्कपट व दयालु महिला के रूप में सामने आती है। 'त्याग का भोग' में रंजन के माध्यम से पूँजीवादी वर्ग की रोमांसवादी प्रकृति का चित्रण किया गया है। पूँजीवादी वर्ग का रंजन इसी बुर्जुवा प्रवृत्ति के

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कारण मनिया का सारा सामान खरीदकर पहले तो उसे रोजगार विहीन करता है और फिर उसे प्राप्त करने के लिए हिप्नोटिज्म का सहारा लेता है। मनिया के कहने पर वह धर्म परिवर्तन भी करता है।

'जहाज का पंछी' में नायक के माध्यम से विभिन्न सामाजिक विकृतियों का उद्घाटन किया गया है। नायक के व्यक्तिगत चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन की झाँकी देखने को मिलती है। वह समाज में विभिन्न लोगों के सम्पर्क में आकर वहाँ के अनुभवों को प्राप्त करता है। ऐसा लगता है जैसे वह विभिन्न सामाजिक विकृतियों का अध्ययन कर रहा है। 'ऋतुचक्र' में विभिन्न पात्रों के माध्यम से ग्रामीण समाज को प्रकट किया गया है। 'भूत का भविष्य' उपन्यास में भूतनाथ के माध्यम से उच्चवर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किये गये अत्याचारों, विभिन्न सामाजिक प्रताड़नाओं से पीड़ित निम्न वर्ग के आक्रोश को व्यक्त किया है।

इस प्रकार इलाचन्द्र जोशी ने अपनी रचनाओं में मानव मन की कुण्ठाओं, विकृतियों एवं मानसिक उलझनों का विश्लेषण मनोविज्ञान की सहायता से प्रस्तुत किया है। उन्होंने व्यक्ति की मानसिक कुण्ठाओं एवं समस्याओं के चित्रण द्वारा सामाजिक समस्याओं एवं जटिलताओं का चित्रण किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मानसिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण के साथ–साथ उनका परिष्कार भी प्रस्तुत किया है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा अन्त में अपने कृत्य पर पश्चाताप करती है। 'संन्यासी' में अहंवादी नन्दकिशोर आत्मतुष्टि के कारण शान्ति को निस्सहाय अवस्था में जाने देता है और जयंती से विवाह कर उसकी आत्महत्या का कारण बनता है और उपन्यास के अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलकर संन्यासी का वेश धारण कर प्रायश्चित करता है। 'सुबह के भूले' की गिरिजा भी अपनी भूल को स्वीकार कर अन्त में अपने पूर्व अवस्था में लौट आती है। 'पर्दे की रानी' का इन्द्रमोहन पश्चाताप की अग्नि में चलती गाड़ी से कूदकर आत्महत्या कर लेता है।

इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने जनवादी व समन्वयवादी दृष्टिकोण को आधार बनाकर उपन्यासों की

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रचना की है। वे विश्वमानवता की स्थापना के लिए मानव के अन्दर छिपी विभिन्न पशु प्रवृत्तियों का उद्‌घाटन कर उनका परिष्कार प्रस्तुत करते हैं। मानव जीवन की बाह्य समस्याओं के स्थान पर उन्होंने उनकी मानसिक समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है। पात्रों की विभिन्न विकृतियों का चित्रण कर अन्त में वे उनके मन में आत्मग्लानि व आत्मपरिमार्जन की भावना जगाकर अपने लक्ष्य को पूर्ण करते हैं।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/